Deg-2
HIST (Hons)

शासक के रूप में इल्तुतमिश का मूल्यांकन

इल्तुतमिश ने मुईज्जुद्दीन द्वारा निर्मित दिल्ली सल्तनत की राजक्षेत्रीय अखंडता को पुनर्स्थापित किया जो विखंडित होने के कगार पर पहुँच गई थी। उसने दिल्ली सल्तनत को विभाजित करने के यल्दूज तथा कुबाचा जैसे महत्वाकांक्षी प्रतिद्वंदियों के प्रयासों को निष्फल कर दिया। इस दौरान उसने भारी सूझबूझ, धैर्य और दूरदर्शिता का परिचय दिया। उसने शासन के आरंभ में ही अनुभव किया था कि उसकी नीति द्रुत विस्तार के बजाय सतत समेकन एवं सुदृढ़ीकरण की होनी चाहिए। उसने लखनौती के खिलजी मलिकों के विरुद्ध तभी रुख किया जब उसने उत्तर-पश्चिम में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली थी।

एक स्वतंत्र सुल्तान के रूप में इल्तुतमिश की कानूनी हैसियत मुसलमानों की दृष्टि में उस समय और अधिक पुष्ट हुई जब 1229 ई० में बगदाद के खलीफा का एक दूत इल्तुतमिश के लिए सुल्तान की मान्यता देनेवाला एक औपचारिक पत्र लेकर दिल्ली पहुँचा। इस अवसर पर इल्तुतमिश ने भव्य उत्सव-समारोह किया।

दिल्ली को भारत में तुर्क शासन का राजनीतिक प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र बनाने का श्रेय इल्तुतमिश को ही दिया जा सकता है। इल्तुतमिश ने दिल्ली को नए और सुन्दर भवनों से सजाया।

P.T.O.

Scanned with CamScanner